नूर या अंधेरा?

अंधे की शफ़ा

nūr yā andherā? andhe kī shafā

Light or Darkness?
The Healing of the Blind Man

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 18]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of no-longer-here https://pixabay.com/illustrations/man-male-youth-lad-boy-person-316883/; Mohamed_hassan https://pixabay.com/vectors/old-woman-senior-walking-cane-8433305/; ditto https://pixabay.com/vectors/silhouette-isolated-older-man-3060100/; ditto https://pixabay.com/vectors/silhouette-businessman-move-3115314/; ditto https://pixabay.com/vectors/silhouette-businessman-hurry-up-3196572/; ditto https://pixabay.com/vectors/silhouette-woman-shopping-bags-pose-4517528/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

नूर ख़ुदा का काम ज़ाहिर करता है	2
नूर आँखें खोल देता है	3
नूर खलबली मचा देता है	5
नूर शक में डाल देता है	6
नूर डाँवाँडोल कर देता है	8
नूर शरीअत की क़ैद से आज़ाद कर देता है	9
नूर की मनज़िल : परस्तिश	12
नूर या अंधेरा?	14
इंजील, यूहन्ना 9	15

एक ख़ास ईद पर ईसा मसीह ने फ़रमाया था कि मैं दुनिया का नूर हूँ। इसका क्या मतलब है? थोड़ी देर बाद कुछ हुआ जिससे मतलब साफ़ पता चला।

यों हुआ : ईसा मसीह अपने शागिर्दों के साथ यरूशलम में चल रहा था कि एक भिक्षु को गली के किनारे देखा। यह आदमी आम भिक्षु नहीं था। यह भीख माँगने पर मजबूर था। क्यों? वह तो नौजवान था, उस उम्र में जब ताक़त अच्छी-ख़ासी होती है, जब इनसान ख़ूब पैसे कमा सकता है। लेकिन उसका एक मसला था : वह पैदाइश से ही अंधा था। सब रुक गए। शागिर्द उस पर अफ़सोस करने लगे। हाय, इस आदमी ने कभी सूरज की किरणें ओस की मोतियों में चमकती-दमकती नहीं देखी थीं। उसका दिल कभी रंगदार फूलों के नज़ारे से लबरेज़ नहीं हुआ था। उसकी आँखें खेतों की हरियाली से कभी तरो-ताज़ा नहीं हुई थीं। उसने कभी नहीं देखा था कि पक्षी किस तरह आसमान को पार करते हैं। कि हुदहुद किस तरह फुदकता हुआ अपनी लंबी चोंच से ज़मीन में से कीड़े निकालता है। सबसे बढ़कर यह कि न उसने कभी अपनी माँ की प्यार-भरी आँखें देखी थीं न अपने बाप का उस पर ललकारता फ़ख़्र।

इनसान तो अपने चेहरे से हर जज़बा ज़ाहिर करता है। प्यार और नफ़रत, ग़ुस्सा और शांति, हँसी और रोना—यह सब कुछ हमारे चेहरों से मालूम होता है। लेकिन यह सब कुछ उस अंधे के लिए एक मुहरबंद किताब थी जो वह कभी नहीं पढ़ेगा।

लेकिन ईसा मसीह अफ़सोस करने नहीं रुका था। वह तो कह चुका था कि मैं दुनिया का नूर हूँ। अब वह शागिर्दों को दिखाना चाहता था कि इसका क्या मतलब है। पहली बात,

नूर ख़ुदा का काम ज़ाहिर करता है

अंधे को देखते देखते शागिर्दों को वह ख़याल आया जो हमें भी जल्द ही आता है : "उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यों पैदा हुआ? क्या इसका कोई गुनाह है या इसके वालिदैन का?"

ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> न इसका कोई गुनाह है और न इसके वालिदैन का। यह इसलिए हुआ कि इसकी ज़िंदगी में अल्लाह का काम ज़ाहिर हो जाए। (यूहन्ना 9:3)

ईसा मसीह गुनाह के नतीजों के बारे में एक अहम बात फ़रमाता है।

► **कौन-सी बात?**

हम नहीं कह सकते कि हर मुसीबत गुनाह का नतीजा है। नौजवान गुनाह के बाइस अंधा नहीं हुआ था बल्कि इसके पीछे ख़ुदा का ख़ास मक़सद था।

► **मक़सद क्या था?**

यह कि ख़ुदा का काम नौजवान की ज़िंदगी में ज़ाहिर हो जाए। ईसा मसीह उसकी मिसाल से शागिर्दों को दिखाना चाहता था कि नूर का क्या असर होता है। हम देखेंगे कि नूर का मुख़्तलिफ़ लोगों पर असर फ़रक़ फ़रक़ होता है। नूर का पहला असर,

नूर आँखें खोल देता है

ईसा मसीह ने ज़मीन पर थूककर मिट्टी सानी और अंधे की आँखों पर लगा दी। फिर कहा,

> जा, शिलोख़ के हौज़ में नहा ले। (शिलोख़ का मतलब 'भेजा हुआ' है।) (यूहन्ना 9:5)

► **यह किस तरह का हौज़ था?**

इस हौज़ का पानी सुरंग के ज़रीए शहर में पहुँचता था।

► **शिलोख़ का क्या मतलब है?**

भेजा हुआ।

► **मसीह ने यह क्यों फ़रमाया?**

- वह अपनी तरफ़ इशारा कर रहा था जो ख़ुदा बाप से भेजा गया था।
- उसने उसकी आँखों को एकदम शफ़ा न दी।

► **क्यों?**

मोजिज़े का अव्वल मक़सद बहाली नहीं बल्कि ईमान था। ईसा मसीह चाहता था कि अंधा हौज़ पर जाकर ईमान का पहला क़दम उठाए। ख़ुद अमल में आने से उसका ईमान थोड़ा मज़बूत हो जाएगा।

► **इससे हम सच्चे शागिर्द के बारे में क्या सीख सकते हैं?**

सच्चा शागिर्द हमेशा ख़ुद अमल में आता है। आसमान की बादशाही में सुस्त और ला-परवा शागिर्दों के लिए जगह नहीं है।

► **क्या अंधा हौज़ के पास गया?**

बिलकुल, वह एकदम गया। उसने रास्ते में क्या सोचा होगा जब वह गलियों में टटोल टटोलकर हौज़ की तरफ़ जा रहा था? उसका दिल कितना तड़प रहा होगा।

► **हौज़ पर अंधे ने क्या किया?**

उसने नहा लिया। वह काम जो उस्ताद ने फ़रमाया था।

► **फिर क्या हुआ?**

उसकी आँखें बहाल हुईं और वह देखने लगा।

► **क्या उसकी शफ़ा हौज़ के पानी से हुई?**

नहीं। वह दुनिया के नूर से खुल गईं। वाह! एकदम कितना मज़ा! नौजवान पहली बार हौज़ का पानी धूप में झिलमिलाता हुआ देख सकता था। आसमान कितना नीला था! जो छोटे बादल नन्ही-सी भेड़ों की तरह चरते चरते उस पर से गुज़र रहे थे वह कितने दिलफ़रेब थे। कुछ लोग हौज़ के किनारे बैठे या खड़े दिखाई दिए। नौजवान फूले न समाया। उसने सोचा, पहले घरवालों को इस ख़ुशी में शरीक करूँ। वह कूदता-फलाँगता हुआ अपने घर चल दिया। अब नूर के दूसरे असर पर ध्यान दें :

नूर खलबली मचा देता है

नौजवान के पड़ोसी और जाननेवाले दंग रह गए। वह पूछने लगे, "क्या यह वही नहीं जो बैठा भीख माँगा करता था?"

बाज़ ने कहा, "हाँ, वही है।"

दूसरे शक में पड़ गए। "नहीं, यह सिर्फ़ उसका हमशक्ल है।"

लेकिन नौजवान बोला, "मैं वही हूँ।"

उन्होंने उससे सवाल किया, "तेरी आँखें किस तरह बहाल हुईं?"

उसने जवाब दिया, "वह आदमी जो ईसा कहलाता है उसने मिट्टी सानकर मेरी आँखों पर लगा दी। फिर उसने मुझे कहा, 'शिलोख़ के हौज़ पर जा और नहा ले।' मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी आँखें बहाल हो गईं।"

► **क्या नौजवान ने यह छिपाने की कोशिश की कि मोजिज़ा ईसा मसीह से हुआ है?**

नहीं। उसने साफ़ इक़रार किया कि ईसा मसीह ने यह काम किया है। ईमान का एक अहम हिस्सा इक़रार है।

यह सुनकर खलबली मच गई। उन्होंने पूछा, "वह कहाँ है?"

उसने जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम।" बेचारा तो अंधा था जब ईसा मसीह उसके पास आया था। न उसने उसे देखा था, न यह कि वह बाद में कहाँ चला गया था।

नूर खलबली मचा देता है। लेकिन नूर का एक तीसरा असर भी होता है :

नूर शक में डाल देता है

पड़ोसी इतने जज़्बे में आ गए कि वह नौजवान को फ़रीसियों के पास ले गए। फ़रीसी उनके मज़हबी राहनुमा थे।

► **क्या यह राहनुमा ख़ुश हुए?**

नहीं। वह एकदम शक में पड़ गए।

► **क्यों?**

यह मोजिज़ा सबत यानी हफ़्ते के दिन हुआ था।

► **यह राहनुमाओं के लिए क्यों ठोकर का बाइस था?**

शरीअत के मुताबिक़ सबत के दिन काम-काज करना मना था। मक़सद यह था कि लोगों को हफ़्ते में एक दिन आराम मिले। लेकिन

बाद में आलिमों ने एक सीधी-सी बात पेचीदा बना ली थी। अब सबत के दिन आटा गूँधना भी मना था। इस नाते से थोड़ी-सी गीली मिट्टी अंधे की आँखों पर लगाना भी काम ठहराया जा सकता था।

बुज़ुर्गों ने नौजवान से पूछ-गछ की कि उसकी आँखें किस तरह बहाल हुईं।

आदमी ने जवाब दिया, "उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैंने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।"

बुज़ुर्गों में से बाज़ ने कहा, "यह आदमी अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, क्योंकि सबत के दिन काम करता है।"

दूसरों ने एतराज़ किया, "गुनाहगार इस क़िस्म के इलाही निशान किस तरह दिखा सकता है?" यों उनमें फूट पड़ गई।

► **इस फूट से हम क्या सीखते हैं?**

जहाँ ईसा मसीह का नूर पहुँचता है वहाँ फूट पड़ती है। कुछ उसे क़बूल करते हैं लेकिन कुछ उसके ख़िलाफ़ हो जाते हैं। कुछ उस नूर में आ जाते हैं लेकिन कुछ अंधेरे के सायों में खिसक जाते हैं।

► **आपने क्या फ़ैसला किया है? क्या आपने उसे क़बूल किया या उसके ख़िलाफ़ हो गए हैं?**

बुज़ुर्ग दुबारा नौजवान से मुख़ातिब हुए, "तू ख़ुद इसके बारे में क्या कहता है? उसने तो तेरी ही आँखों को बहाल किया है।"

नौजवान ने जवाब दिया, "वह नबी है।"

► **क्या आपने कुछ महसूस किया?**

आहिस्ता आहिस्ता अंधे की ईसा मसीह के बारे राय बढ़ रही है। अब वह उसे नबी ठहरा रहा है।

► **आपकी ईसा मसीह के बारे में राय क्या है?**

नूर का एक चौथा असर भी होता है,

नूर डाँवाँडोल कर देता है

बुज़ुर्गों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि नौजवान पहले अंधा था। उन्होंने उसके वालिदैन को बुलाया। उनसे पूछा, "क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था? अब यह किस तरह देख सकता है?"

उसके वालिदैन ने जवाब दिया, "हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते वक़्त अंधा था। लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह किस तरह देख सकता है या कि किसने इसकी आँखों को बहाल किया है। इससे ख़ुद पता करें, यह बालिग़ है। यह ख़ुद अपने बारे में बता सकता है।"

असल में वालिदैन को डर था इसलिए यों कहा। क्योंकि फ़ैसला हो चुका था कि जो भी ईसा मसीह के हक़ में हो उसे जमात से निकाल दिया जाएगा।

► **क्या आपको ऐसा कोई डर है?**

माँ-बाप बुज़ुर्गों से डरकर गोल-मोल बातें करने लगे। कितने लोग गोल-मोल बातें करने लगते हैं जब उनसे पूछा जाए कि तुम ईसा मसीह के बारे में क्या सोचते हो। वह साफ़ बात करने को तैयार नहीं होते। नूर का पाँचवाँ असर :

नूर शरीअत की क़ैद से आज़ाद कर देता है

बुज़ुर्गों ने एक बार फिर नौजवान को बुलाया, "अल्लाह को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि यह आदमी गुनाहगार है।"

आदमी ने जवाब दिया, "मुझे क्या पता है कि वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ : पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ!"

यह आदमी कितना चुस्त था। उसने अपने माँ-बाप की-सी गोल-मोल बातें न कीं बल्कि सीधा वह बात की जो सबकी आँखों के सामने थी।

फिर उन्होंने उससे सवाल किया, "उसने तेरे साथ क्या किया? उसने किस तरह तेरी आँखों को बहाल कर दिया?"

अब नौजवान ने अपना आपा खो बैठा। उसने जवाब दिया, "मैं पहले भी आपको बता चुका हूँ और आपने सुना नहीं। क्या आप भी उसके शागिर्द बनना चाहते हैं?"

बुज़ुर्गों का सिर्फ़ एक मक़सद था। यह कि बार बार पूछने से उसे ग़लत साबित करें। इसलिए नौजवान ने मज़ाक़ में कहा कि क्या आप भी

उसके शागिर्द बनना चाहते हैं? वह तो ख़ूब जानता था कि वह शागिर्द नहीं बनना चाहते थे।

► **क्या आपने ध्यान दिया कि नौजवान ने अपने बारे में क्या कहा?**
अपनी बात से उसने साफ़ कह दिया कि मैं उसका शागिर्द हूँ। अब तक उसने उसे देखा तक नहीं था। तो भी वह अपने आपको उसका पक्का शागिर्द समझता था।

बुज़ुर्ग तैश में आ गए। उन्होंने उसे बुरा-भला कहा, "तू ही उसका शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं। हम तो जानते हैं कि अल्लाह ने मूसा से बात की है, लेकिन इसके बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।"

इस जगह पर नौजवान और बुज़ुर्गों में फूट साफ़ नज़र आती है।

► **कैसी फूट?**
बुज़ुर्ग शरीअत पर बहुत फ़ख़्र करते थे। लेकिन इस फ़ख़्र ने उन्हें अल-मसीह के लिए अंधा कर दिया जब वह उनके सामने आ मौजूद हुआ। शरीअत और नबियों के नविश्ते तो अल-मसीह की पेशगोई करते थे। घमंड इनसान को ख़ुदा से दूर कर देता है।

नौजवान ने जवाब दिया, "अजीब बात है, उसने मेरी आँखों को शफ़ा दी है और फिर भी आप नहीं जानते कि वह कहाँ से है। हम जानते हैं कि अल्लाह गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उसकी सुनता है जो उसका ख़ौफ़ मानता और उसकी मरज़ी के मुताबिक़ चलता है। इब्तिदा ही से

यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की आँखों को बहाल कर दिया हो। अगर यह आदमी अल्लाह की तरफ़ से न होता तो कुछ न कर सकता।"

नौजवान सादा-सा आदमी था जबकि बुज़ुर्ग आलिम थे। कितनी अजीब बात कि उसी ने रूहानी हक़ीक़त को समझ ली थी जबकि बुज़ुर्ग इसके लिए अंधे थे। जितना नौजवान नूर की सच्चाई की तरफ़ बढ़ रहा था उतना ही बुज़ुर्ग तारीकी के सायों में गुम होते जा रहे थे।

► **नौजवान ने दो जवाब दिए। वह क्या थे?**

ज़ाहिर है कि ईसा मसीह ख़ुदा की तरफ़ से है। क्योंकि

- ख़ुदा उसी की सुनता है जो गुनाह नहीं करता। जो उसका ख़ौफ़ रखता और उसकी मरज़ी के मुताबिक़ चलता है।
- ऐसा मोजिज़ा पहले कभी नहीं हुआ है।

यह सुनकर बुज़ुर्गों ने उसे गालियाँ दीं, "तू जो गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा उस्ताद बनना चाहता है?" यह कहकर उन्होंने उसे जमात में से निकाल दिया।

► **क्या आपने नोट किया कि उन्होंने उसे क्या ठहराया?**

उन्होंने कहा कि तू गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ है।

► **लेकिन ईसा मसीह ने उसके बारे में क्या कहा था?**

उसके अंधेपन की वजह गुनाह नहीं है।

► **ईसा मसीह और बुज़ुर्गों में क्या फ़रक़ नज़र आता है?**

बुज़ुर्ग शरीअत को जेल समझते हैं। हर एक को ज़ंजीरों में जकड़कर उसमें डालना है। अपने आपको वह जेल के गार्ड समझते हैं। ईसा मसीह की फ़ितरत बिलकुल फ़रक़ है। वह हमें जेल की ज़ंजीरों से निकालना चाहता है। वह हमें अपने नूर में लाना चाहता है ताकि हम उसकी इलाही धूप सेंकें। वह नहीं चाहता कि हम ख़ुदा के क़ैदी हों। वह चाहता है कि हम ख़ुदा के आज़ाद फ़रज़ंद हों। यही नूर की बड़ी ख़ुशख़बरी है।

शरीअत और ईसा मसीह में यही बड़ा फ़रक़ है। शरीअत हमें बताती है कि क्या करना है। ज़रूर वह हमें गुनाह के ख़तरों से महफ़ूज़ रखना चाहती है। लेकिन जल्द ही हमें पता चलता है कि हम ख़ुदा के अहकाम पूरे नहीं कर सकते। बार बार हम फ़ेल हो जाते हैं। ईसा मसीह इसी लिए आया ताकि हमारी यह नाक़िस हालत बहाल करे। ताकि हमारे गुनाहों को मिटाकर हमें आज़ाद करे। नूर का छटा असर,

नूर की मनज़िल : परस्तिश

अब देखो यह अज़ीम बात : इस नौजवान ने ईसा मसीह को अब तक नहीं देखा था। तो भी उसने मज़बूती से बुज़ुर्गों की धमकियों का सामना किया। वह अपने यक़ीन पर क़ायम रहा कि मैं ईसा मसीह का शागिर्द हूँ हालाँकि अब तक उसकी दुबारा मुलाक़ात उससे नहीं हुई थी।

ईसा मसीह को पता चला कि उसे निकाल दिया गया है तो वह उसको मिला और पूछा,

> क्या तू इब्ने-आदम पर ईमान रखता है?
> (यूहन्ना 9:35)

► **इब्ने-आदम से क्या मुराद है?**

दानियाल नबी ने सदियों पहले अल-मसीह के बारे में एक रोया देखी थी। उसमें उसने देखा था कि

> आसमान के बादलों के साथ साथ कोई आ रहा है जो इब्ने-आदम-सा लग रहा है। जब क़दीमुल-ऐयाम के क़रीब पहुँचा तो उसके हुज़ूर लाया गया। उसे सलतनत, इज़्ज़त और बादशाही दी गई, और हर क़ौम, उम्मत और ज़बान के अफ़राद ने उसकी परस्तिश की। उसकी हुकूमत अबदी है और कभी ख़त्म नहीं होगी। उसकी बादशाही कभी तबाह नहीं होगी। (दानियाल 9:13-14)

नौजवान ने कहा, "ख़ुदावंद, वह कौन है? मुझे बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।" नौजवान का ईसा मसीह पर इतना भरोसा था कि उसकी हर फ़रमाइश पूरी करने को तैयार था।

ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> तूने उसे देख लिया है बल्कि वह तुझसे बात कर रहा है। (यूहन्ना 9:37)

► **नौजवान ने क्या जवाब दिया?**

उसने कहा, “ख़ुदावंद, मैं ईमान रखता हूँ” और उसे सिजदा किया। यों नौजवान पूरे ईमान तक पहुँच गया। पहले वह उसका नाम ही जानता था। फिर उसने इक़रार किया कि यह नबी है। इसके बाद जब बुज़ुर्गों ने उसे धमकी दी तो उसने साफ़ कहा कि मैं उसका शागिर्द हूँ। यों वह क़दम बक़दम ईमान में तरक़्क़ी करता गया। अब जब ईसा मसीह ने फ़रमाया कि मैं ही इब्ने-आदम यानी अल-मसीह हूँ तो वह एक पल भी न झिजका बल्कि सीधा उसे सिजदा किया। पहले उसकी जिस्मानी आँखें रौशन हुईं, लेकिन अब इससे बढ़कर हुआ। अब उसकी रूहानी आँखें खुल गईं और ईसा मसीह के नूर से रौशन हुईं।

नूर या अंधेरा?

तब ईसा मसीह ने कहा,

> मैं अदालत करने के लिए इस दुनिया में आया हूँ, इस-लिए कि अंधे देखें और देखनेवाले अंधे हो जाएँ। (यूहन्ना 9:39)

► **वह किस नाते से अदालत करने आया है?**

रात के वक़्त जब लाइट अंधेरे को रौशन करे तो शरीफ़ लोग उसमें चलते हैं। लेकिन चोर और डाकू लाइट से दूर सायों में छिपे रहते हैं। इसी तरह कुछ की आँखें ईसा मसीह के नूर से रौशन हो जाती हैं। ऐसे लोग उसकी सच्चाई पहचानकर उसे ख़ुशी से क़बूल करते हैं।

लेकिन अफ़सोस, दूसरे नूर को बरदाश्त नहीं कर सकते। ऐसे लोग नूर से दूर सायों में खिसक जाते हैं। ऐसे लोग रूहानी अंधे रहते हैं। कितनी अजीब बात! जो पहले अंधा था वह न सिर्फ़ अपनी जिस्मानी आँखों से देखने लगा बल्कि उसकी रूहानी आँखें भी रौशन हुईं। बुज़ुर्गों के साथ इसके उलट हुआ। वह अपनी जिस्मानी आँखों से देख तो सकते थे मगर उनकी रूहानी आँखें अंधी रहीं।

मेरे अज़ीज़, क्या आप चाहते हैं कि आपकी आँखें रौशन हो जाएँ? ईसा मसीह के पास आएँ। वही दुनिया का नूर है। शरीअत और अपने नेक कामों पर फ़ख़्र मत करना, अपने आप पर भरोसा मत करना। उसी नूर से मिन्नत करें कि वह आकर आपको रौशन करे।

इंजील, यूहन्ना 9

चलते चलते ईसा ने एक आदमी को देखा जो पैदाइश का अंधा था। उसके शागिर्दों ने उससे पूछा, “उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यों पैदा हुआ? क्या इसका कोई गुनाह है या इसके वालिदैन का?”

ईसा ने जवाब दिया, “न इसका कोई गुनाह है और न इसके वालिदैन का। यह इसलिए हुआ कि इसकी ज़िंदगी में अल्लाह का काम ज़ाहिर हो जाए। अभी दिन है। लाज़िम है कि हम जितनी देर

तक दिन है उसका काम करते रहें जिसने मुझे भेजा है। क्योंकि रात आनेवाली है, उस वक़्त कोई काम नहीं कर सकेगा। लेकिन जितनी देर तक मैं दुनिया में हूँ उतनी देर तक मैं दुनिया का नूर हूँ।”

यह कहकर उसने ज़मीन पर थूककर मिट्टी सानी और उसकी आँखों पर लगा दी। उसने उससे कहा, “जा, शिलोख़ के हौज़ में नहा ले।” (शिलोख़ का मतलब ‘भेजा हुआ’ है।) अंधे ने जाकर नहा लिया। जब वापस आया तो वह देख सकता था।

उसके हमसाये और वह जिन्होंने पहले उसे भीख माँगते देखा था पूछने लगे, “क्या यह वही नहीं जो बैठा भीख माँगा करता था?”

बाज़ ने कहा, “हाँ, वही है।”

औरों ने इनकार किया, “नहीं, यह सिर्फ़ उसका हमशक्ल है।”

लेकिन आदमी ने ख़ुद इसरार किया, “मैं वही हूँ।”

उन्होंने उससे सवाल किया, “तेरी आँखें किस तरह बहाल हुईं?”

उसने जवाब दिया, “वह आदमी जो ईसा कहलाता है उसने मिट्टी सानकर मेरी आँखों पर लगा दी। फिर उसने मुझे कहा, ‘शिलोख़ के हौज़ पर जा और नहा ले।’ मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी आँखें बहाल हो गईं।”

उन्होंने पूछा, “वह कहाँ है?”

उसने जवाब दिया, “मुझे नहीं मालूम।”

तब वह शफ़ायाब अंधे को फ़रीसियों के पास ले गए। जिस दिन ईसा ने मिट्टी सानकर उसकी आँखों को बहाल किया था वह सबत का दिन था। इसलिए फ़रीसियों ने भी उससे पूछ-गछ की कि उसे किस तरह बसारत मिल गई। आदमी ने जवाब दिया, “उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैंने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।”

फ़रीसियों में से बाज़ ने कहा, “यह शख़्स अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, क्योंकि सबत के दिन काम करता है।”

दूसरों ने एतराज़ किया, “गुनाहगार इस क़िस्म के इलाही निशान किस तरह दिखा सकता है?” यों उनमें फूट पड़ गई।

फिर वह दुबारा उस आदमी से मुख़ातिब हुए जो पहले अंधा था, “तू ख़ुद इसके बारे में क्या कहता है? उसने तो तेरी ही आँखों को बहाल किया है।”

उसने जवाब दिया, “वह नबी है।”

यहूदियों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि वह वाक़ई अंधा था और फिर बहाल हो गया है। इसलिए उन्होंने उसके वालिदैन को बु-लाया। उन्होंने उनसे पूछा, “क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था? अब यह किस तरह देख सकता है?”

उसके वालिदैन ने जवाब दिया, “हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते वक़्त अंधा था। लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह किस तरह देख सकता है या कि किसने इसकी आँखों को बहाल किया है। इससे ख़ुद पता करें, यह बालिग़ है। यह ख़ुद अपने बारे में बता सकता है।” उसके वालिदैन ने यह इसलिए कहा कि वह यहूदियों से डरते थे। क्योंकि वह फ़ैसला कर चुके थे कि जो भी ईसा को मसीह क़रार दे उसे यहूदी जमात से निकाल दिया जाए। यही वजह थी कि उसके वालिदैन ने कहा था, “यह बालिग़ है, इससे ख़ुद पूछ लें।”

एक बार फिर उन्होंने शफ़ायाब अंधे को बुलाया, “अल्लाह को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि यह आदमी गुनाहगार है।”

आदमी ने जवाब दिया, “मुझे क्या पता है कि वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ, पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ!”

फिर उन्होंने उससे सवाल किया, “उसने तेरे साथ क्या किया? उसने किस तरह तेरी आँखों को बहाल कर दिया?”

उसने जवाब दिया, “मैं पहले भी आपको बता चुका हूँ और आपने सुना नहीं। क्या आप भी उसके शागिर्द बनना चाहते हैं?”

इस पर उन्होंने उसे बुरा-भला कहा, “तू ही उसका शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं। हम तो जानते हैं कि अल्लाह ने मूसा से

बात की है, लेकिन इसके बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।”

आदमी ने जवाब दिया, “अजीब बात है, उसने मेरी आँखों को शफ़ा दी है और फिर भी आप नहीं जानते कि वह कहाँ से है। हम जानते हैं कि अल्लाह गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उसकी सुनता है जो उसका ख़ौफ़ मानता और उसकी मरज़ी के मुताबिक़ चलता है। इब्तिदा ही से यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की आँखों को बहाल कर दिया हो। अगर यह आदमी अल्लाह की तरफ़ से न होता तो कुछ न कर सकता।”

जवाब में उन्होंने उसे बताया, “तू जो गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा उस्ताद बनना चाहता है?” यह कहकर उन्होंने उसे जमात में से निकाल दिया।

जब ईसा को पता चला कि उसे निकाल दिया गया है तो वह उसको मिला और पूछा, “क्या तू इब्ने-आदम पर ईमान रखता है?”

उसने कहा, “ख़ुदावंद, वह कौन है? मुझे बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।”

ईसा ने जवाब दिया, “तूने उसे देख लिया है बल्कि वह तुझसे बात कर रहा है।”

उसने कहा, “ख़ुदावंद, मैं ईमान रखता हूँ” और उसे सिजदा किया।
ईसा ने कहा, “मैं अदालत करने के लिए इस दुनिया में आया हूँ, इसलिए कि अंधे देखें और देखनेवाले अंधे हो जाएँ।”
कुछ फ़रीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ सुनकर पूछने लगे, “अच्छा, हम भी अंधे हैं?”
ईसा ने उनसे कहा, “अगर तुम अंधे होते तो तुम क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि तुम दावा करते हो कि हम देख सकते हैं इसलिए तुम्हारा गुनाह क़ायम रहता है।